सत्र 2025–26

Madhyma Diploma in Performing Art (M.D.P.A.)

I Year

Regular

S.No.	Paper Description	Maximum	Minimum
01.	Theory – I	100	33
02.	Practical – Demonstration & Viva	100	33
	Grand Total	200	

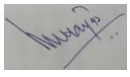

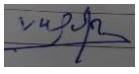
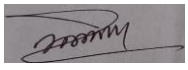
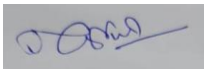

सत्र 2025–26
नियमित परीक्षार्थियों हेतु
मध्यमा डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट प्रथम वर्ष
तबला–शास्त्र

समय : 3 घंटे

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

इकाई 1

स्वर (शुद्ध, विकृत) श्रुति, आलाप, तान, सरगम, एवं लक्षण गीत की परिभाषाएँ।

इकाई 2

पिछले पाठ्यक्रम के तालों के अतिरिक्त निम्नांकित तालों के ठेकों को ठाह, दुगुन, चौगुन में वर्णन सहित लिपिबद्ध करना। (झूमरा, चौताल, सूलताल)

इकाई 3

तबले की उत्पत्ति की संक्षिप्त ऐतिहासिक जानकारी। दिं, त्रक, घ्ड़ान, क्ड़धातिट, क्ड़ान, घेघेतिट इन बोल समूहों के निकास स्थान एवं निकास विधि की जानकारी।

इकाई 4

उदाहरण सहित संक्षिप्त जानकारी–ग्रह, मुखडा मोहरा लग्गी, तिहाई (दमदार एवं बेदम), साधारण परन, पेशकार।

इकाई 5

पिछले पाठ्यक्रमों के कायदों के अतिरिक्त निम्नालिखित कायदे व रेले को चार पल्टों एवं तिहाई सहित ताल लिपि में लिपिबद्ध करने का अभ्यास।

(अ) धाति धागे नधा तिरकिट। धाति धागे तिन किन।

(ब) धाऽतिट घिडनग धाऽतिट घिडनग। धाऽतिट घिडगन तीना किड़नग।

रूपक, त्रिताल, तथा झपताल में दो–दो मुखड़े लिखने का अभ्यास।

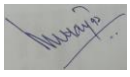 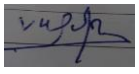 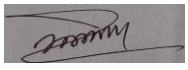 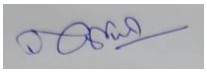

सत्र 2025–26
नियमित परीक्षार्थियों हेतु
मध्यमा डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट प्रथम वर्ष
क्रियात्मक

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

1. पिछले पाठ्यक्रमों के तालों सहित–झूमरा, चौताल तथा सूलताल के ठेकों की पढन्त एवं तबले पर बजाने का अभ्यास।

2. दिं, त्रक, कड़ान, क्डधातिट, घेघेतिट, घ्ड़ान– इन बोलों को तबले तथा बांयें पर निकालना।

3. पिछले पाठ्यक्रमों के कायदों के अतिरिक्त निम्न कायदे व रेले को चार पल्टे तथा तिहाई के साथ चौगुन में बजाना (त्रिताल में)।
(अ) धाति धागे नधा तिरकिट। धाति धागे तिन किन।

(ब) धाऽतिट घिडनग धाऽतिट घिडनग। धाऽतिट घिडगन तीना किड़नग।

(स) धागेनधा तिरकिट धिनगिन धागेनधा तिरकिट।

(द) धाऽतिर किटधाऽ तिट घेन धाति घेन तिन किन।

4. रूपक, त्रिताल तथा झपताल में दो–दो मुखड़े व तिहाईयॉ।

5. लहरे के साथ पाठ्यक्रम के 6, 7, 8 एवं 10 मात्राओं के ठेकों को ठाह, दुगुन एवं चौगुन लय में बजाने का अभ्यास।

:संदर्भ सूची:

1. तबला प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
2. तबला कौमुदी भाग 1 एवं 2 – पं. रामशंकर पागलदास
3. ताल प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा

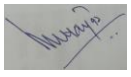

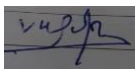
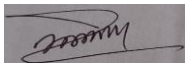
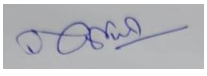

सत्र 2026–27

Madhyma Diploma in Performing Art (M.D.P.A.)
Final Year
Regular

S.No.	Paper Description	Maximum	Minimum
01.	Theory – I	100	33
02.	Practical – Demonstration & Viva	100	33
	Grand Total	200	

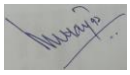

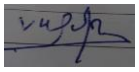
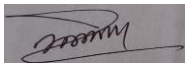
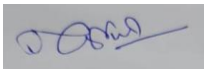

सत्र 2026–27
नियमित परीक्षार्थियों हेतु
मध्यमा डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट–अंतिम वर्ष
तबला (शास्त्र)

समय : 3 घंटे

पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	33

इकाई 1

तबला वादक के गुण–दोष। काल, मार्ग, क्रिया, तथा अंग की संक्षिप्त जानकारी। पिछले पाठ्यक्रम में सीखे गये विभिन्न रचना प्रकारों को ताल लिपि में लिखने का अभ्यास।

इकाई 2

मुगल काल से वर्तमान काल तक के संगीत का संक्षिप्त इतिहास तथा तबले के घरानों की जानकारी।

इकाई 3

गीत के अवयव–स्थायी, अंतरा, संचारी, आभोग, की जानकारी। निम्नलिखित पर टिप्पणियां–परन (चक्रदार तथा फरमाईशी), उठान, गत, स्वतंत्र वादन, साथ–संगति, खुले तथा बन्द बोल।

इकाई 4

पिछले पाठ्यक्रमों के तालों के अतिरिक्त धमार तथा पंचम सवारी (15 मात्रा) तालों को वर्णन सहित ठाह, दुगुन तथा चौगुन में लिपिबद्ध करना। एकताल, झपताल एवं रूपक तालों के ठेके तिगुन की लयकारी में लिपिबद्ध करना।

इकाई 5

विष्णु दिगम्बर पलुस्कर तालिपि पद्वति की संक्षिप्त जानकारी तथा पाठ्यक्रम के तालों को पलुस्कर तालिपि पद्धति में लिपिबद्ध करना।

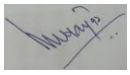 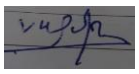 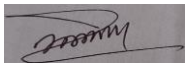 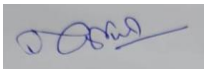

सत्र 2026–27
नियमित परीक्षार्थियों हेतु
मध्यमा डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट–अंतिम वर्ष
क्रियात्मक

पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	33

1. त्रिताल व झपताल में लहरे के साथ पेशकार, कायदे, रेले, मुखड़े, तिहाई, तथा सरल परन, चक्करदार परन का स्वंतत्र वादन तथा हाथ से ताली देकर पढ़न्त।
2. त्रिताल में :– (अ) बनारस घराने का कोई एक कायदा चार पल्टे, तिहाई सहित।
   (ब) धाऽतिर किटतक धिरधिर किटतक धाऽतिर किटतक तीनाकिटतक, रेला चार पलटों व तिहाई सहित बजाना।
3. रूपक में साधारण परन लहरे के साथ बजाना तथा एकताल में दो मुखड़े व दो तिहाई लहरे के साथ बजाना।
4. चौताल, धमार, सूलताल, तालों को पखावज वादन शैली अनुसार तबले पर बजाना।
5. दादरा तथा कहरवा में चार–चार लग्गियॉ तथा तिहाई।
6. एकताल एवं तिलवाड़ा तालों के ठेके विलम्बित एवं त्रिताल एवं एकताल के ठेकों को द्रुत लय में बजाने की क्षमता।

:संदर्भ सूची:

1. तबला प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
2. तबला कौमुदी भाग 1 एवं 2 – पं. रामशंकर पागलदास
3. ताल प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा